thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म्॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 11 अंक : 19 रोहतक, 14 अक्तूबर, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

यदि ईश्वर वेदज्ञान न देता तो मनुष्य पशुवत् ही रह जाता

❑ खुशहालचन्द्र आर्य

ईश्वर ने मनुष्य के सहयोग के लिए जिससे वह अपना जीवन सुचारु रूप से चला सके, इस उद्देश्य से सृष्टि की रचना की जिसमें सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, वायु, समुद्र, नदी-नाले, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि बनाए। सृष्टि रचने के बाद ईश्वर ने तिब्बत के पठार पर एक कृत्रिम गर्भाशय बनाकर, उसमें रज-वीर्य का समावेश करके युवा लड़के-लड़कियां उत्पन्न की जिससे आगे भी सृष्टि चलती रहे। यदि ईश्वर मनुष्य उत्पत्ति के समय युवाओं को उत्पन्न न करके यदि बच्चे या वृद्ध पैदा करता तो बच्चों का पालन-पोषण कौन करता? और वृद्धों से आगे का संसार नहीं चलता। इसीलिए नवयुवक व नवयुवतियाँ उत्पन्न कीं। ईश्वर ने मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही चार ऋषियों, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा था, जिनके कर्म सर्वोत्तम होने से पुण्य आत्माएं थीं। उनके मुख से चार वेद, जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, इनको उनके मुख से उच्चारित करवाया। वैसे ये वेद, ईश्वरीय ज्ञान है, ऋषियों के मुख से तो केवल उच्चारित ही करवाया है। जैसे माईक में मनुष्य बोलता है, माईक तो केवल उसकी आवाज को तेज आवाज में प्रसारित कर देता है ठीक इसी प्रकार ईश्वर, वेदज्ञान को ऋषियों के हृदय में प्रकाशित कर देता है और ऋषियों ने उस ज्ञान को अपने मुख से उच्चारित करके सब मनुष्यों के सामने प्रकट कर दिया। वैसे तो वेदज्ञान उपस्थित सभी लोगों ने सुना, पर ब्रह्मा ऋषि जो सबसे अधिक प्रखर और तीव्र बुद्धि वाले थे, उन्होंने वेदज्ञान को सुनकर कण्ठस्थ कर लिया और फिर वे उपस्थित लोगों को सुनाने लगे। उपस्थित लोग अपने पुत्र व पौत्रों को सुनाने लगे। इस प्रकार यह परम्परा लाखों, करोड़ों वर्ष तक चलती रही। जब कागज, स्याही, कलम, दवात का आविष्कार हो गया तो यह चारों वेद लिपिबद्ध कर दिये गये। तब से अभी तक चले आ रहे हैं। इसीलिए वेदों का दूसरा नाम श्रुति भी है यानि सुनकर व सुनाकर चलने वाला ज्ञान। मैं यहाँ यह लिखना अति आवश्यक समझता हूँ कि वैदिक धर्म की महानता यह है कि यह ईश्वरीय ज्ञान होने से मानव-मात्र का धर्म है। इसमें मानवमात्र के लिए नहीं बल्कि प्राणिमात्र के लिए भी कोई भेदभाव या कोई छोटा-बड़ा नहीं है। कारण ईश्वर सबका पिता है और सब जीव उसके पुत्रवत् हैं। इसलिए किसी प्रकार का भेदभाव होने का प्रश्न ही नहीं उठता। बाकी जितने भी मत, पंथ, सम्प्रदाय हैं, जिनको धर्म भी कहा जाता है, वे सब मनुष्यों के बनाये हुए हैं। मनुष्य चाहे कितना भी महान् क्यों न हो, परन्तु मनुष्य होने के नाते अल्पज्ञ प्राणी है। उसमें अपना और पराये का भेदभाव कम या अधिक अवश्य रहेगा। इसीलिए अन्य जितने भी मत, पंथ व सम्प्रदाय हैं, वे अपने ही मानने वालों का पक्ष लेते हैं, यानी उनके ही हितचिन्तक हैं, दूसरों के नहीं। परन्तु वैदिक धर्म ही एक मानवीय धर्म है जो सबके लिए समान है।

इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए यह लिखना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्य को पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ दी हैं, उनके लिए ईश्वर ने पाँच जड़ देवता जिनको तत्त्व भी कहते हैं, दिये हैं। जिनके द्वारा ज्ञानेन्द्रियों में वह शक्ति आती है जिससे वे अपना काम कर पाती है। जैसे आँखों के लिए ईश्वर ने जड़ देवता अग्नि बनाया है जिससे आँखें रूप देख पाती हैं। इसी प्रकार कानों के लिए आकाश बनाया है जिससे कान शब्दों को सुनता है। नाक के लिए पृथ्वी बनाई है जिससे नाक गन्ध या दुर्गन्ध का ज्ञान करता है। जिह्वा के लिए ईश्वर ने जड़ देवता पानी बनाया है जिससे वह रस का अनुभव कर सके। त्वचा के लिए हवा बनाया है जिससे त्वचा स्पर्श का अनुभव कर सके। यह पाँचों तत्त्व ईश्वर मनुष्य की उत्पत्ति से पहले ही बना देता है। मनुष्यों में एक इन्द्रिय और होती है जिसे बुद्धि कहते हैं। यह मनुष्यों में अन्य जीवों से अधिक होती है। इस बुद्धि के लिए ईश्वर ने वेदज्ञान दिया है जिसके पढ़ने व सुनने से बुद्धि में ज्ञान की वृद्धि होती है और वेदज्ञान से बुद्धि यह समझ पाती है कि मुझे क्या काम करने चाहिएं और क्या काम नहीं करने चाहिएं। वेदज्ञान मनुष्य का बुद्धि के द्वारा पथ-प्रदर्शन करता है जिससे वह अच्छे व पुण्य कार्यों को करता हुआ मोक्ष की ओर अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। यह मनुष्य योनि में ही प्राप्त होता है। जैसे एक वैज्ञानिक कोई मशीन बनाता है तो उसका कैसे प्रयोग किया जावे इसके लिए वह प्रयोग करने की विधि या तरीका एक छोटी-सी पुस्तक में लिख देता है जिसको देखकर उस मशीन का प्रयोग करने वाला प्रयोग करता है। इसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही यह वेदज्ञान दे दिया जिसको पढ़कर या सुनकर अपने व दूसरों के जीवन को सुचारु रूप से चला सके और अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सके।

यहाँ आपको यह बताना बहुत जरूरी है कि जीवों में दो किस्म का ज्ञान होता है। एक स्वाभाविक, दूसरा नैमित्तिक। स्वाभाविक ज्ञान पशु-पक्षियों में अधिक होता है, कारण उनको इसी ज्ञान से पूरा जीवन व्यतीत करना होता है। इस ज्ञान से जीव खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना तथा बच्चे पैदा करना ही नित्य कर्म कर सकता है, उसको जीव को कोई फल नहीं मिलता। नैमित्तिक ज्ञान वह होता है जो सीखने से सीखा जाये। यह ज्ञान पशु-पक्षियों में बहुत कम और मनुष्यों में बुद्धि अधिक होने के कारण यह ज्ञान भी अधिक होता है। कारण इस ज्ञान का बुद्धि से सम्बन्ध है। आप देखते होंगे कि कुत्ता का बच्चा पैदा होते ही पानी में तैरने लग जाता है, कारण यह कुत्ते के लिए स्वाभाविक ज्ञान है। परन्तु मनुष्य का बच्चा पैदा होते ही पानी में नहीं तैर सकता। यदि पानी में छोड़ोगे तो वह डूब जाएगा और जब तक उसको तैरना सिखाया नहीं जायेगा तब तक वह पानी में नहीं तैर सकेगा कारण यह मनुष्य के लिए नैमित्तिक ज्ञान है।

मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान, खाने-पीने, सोने-जागने, उठने-बैठने तक ही सीमित है। बाकी काम वह सिखाने से सीखता है। स्वाभाविक ज्ञान के कार्यों में मनुष्य को भी फल नहीं मिलता, बाकी नैमित्तिक ज्ञान से किये हुये अच्छे या बुरे कार्यों का ईश्वर मनुष्य को अच्छे कार्यों का सुख के रूप में, बुरे कार्यों का दुःख के रूप में फल देता है। मनुष्य की पढ़ाई, लिखाई सब नैमित्तिक ज्ञान से होती है। इसीलिए ईश्वर ने मनुष्य को अपना तथा दूसरों के जीवन को सुखी व उन्नत बनाने के लिए उसे क्या काम करने चाहिएं और क्या काम नहीं करने चाहिएं। इसीलिए ईश्वर ने मनुष्य की उत्पत्ति करते ही, उसे चार ऋषियों द्वारा चार वेदों का ज्ञान दिया। जिनको

शेष पृष्ठ : पर....

thearyasamaj.org

हम सब प्राणी एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें

❑ मनमोहन कुमार आर्य

मित्रता दो व्यक्तियों का परस्पर एक मधुरता से पूर्ण सम्बन्ध होता है। यह सम्बन्ध कुछ इस प्रकार का होता है कि जब दोनों मिलते हैं तो अपने सुख-दुःख व अन्य सभी बाते एक-दूसरे को बताते हैं। मित्रों के सुख व दुःख का एक दूसरे को पता होता है। कोई किसी से कुछ छिपाता नहीं है। किसी भी बात को छिपाना मित्रता के धर्म के विपरीत होता है। अन्यों से पता लगने पर दूसरे को मित्र को दुःख होता है। किसी भी प्रकार का यदि किसी एक पर संकट आता है तो दूसरा मित्र अपने संकट ग्रस्त मित्र की हर प्रकार की सहायता करता है। हमारा प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित एक अनुभव है। एक सम्पन्न युवा व्यक्ति थे। वह अपने आर्थिक दृष्टि से कमजोर मित्र को आवासीय भूखण्ड खरीदने के लिए प्रेरित करते थे। एक बार भाव विभोर उन्होंने कहा कि भूखण्ड तुम खरीद लों, भवन मैं बनवा दूंगा। कुछ ही दिनों बाद एक सड़क दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। यह घटना मित्र की भावनायें कैसी होती है, उसका एक उदाहरण है। एक दूसरा उदाहरण भी हमारे प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित है। एक व्यक्ति की पत्नी की तबियत अचानक बिगड़ गई। छुट्टी का दिन था। डाक्टर ने तत्काल वृहत व जटिल आपरेशन कराने का परामर्श दिया। उस व्यक्ति के पास पैसे नहीं थे। उनके एक अन्य मित्र एक दम से सामने आये और सारी व्यवस्था कर दी। बाद में दोनों के बीच धन का लेन-देन हो गया। यदि उस समय उनकी सहायता न मिलती तो परिणाम सामने था। प्राणों का संकट समक्ष था और उस मित्र की सहायता ने उसे टाल दिया। यह भी अनुभव है कि विपरीत परिस्थितियों व आवास निर्माण में अनेक निकट मित्रों ने बिना कहे ही आर्थिक सहायता का प्रस्ताव किया। कुछ ने मना करने पर भी सहायता की। इस प्रकार का भाव सभी मित्रों में देखा जाता है। मित्रता प्रायः समान गुणों वाले दो व्यक्तियों में होती है जिनकी आयु भी लगभग समान व कुछ कम-ज्यादा होती है। दो मित्र वह होते हैं जिनके हृदय परस्पर जुड़े हुए होते हैं। जिस या जिन-जिन से हमारी मित्रता होती है उनके प्रति हृदय में एक विशेष प्रकार का आदर, प्रेम, सहयोग की भावना, कल्याण की इच्छा व उन्हें सुख पहुंचाने की भावना होती है। गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को सखा के नाम से सम्बोधित किया है। सखा शब्द भी मित्र का ही पर्यायवाची शब्द है। अर्जुन से मित्रता के सम्बन्ध होने के कारण श्री कृष्ण ने महाभारत के युद्ध में अर्जुन की सहायता की। यदि महाभारत पर दृष्टिपात करें तो हम देखते हैं कि श्री कृष्ण की दुर्योधन या उसके सहयोगियों से अपनी कोई निजी शत्रुता नहीं थी। यह युद्ध सत्य व असत्य के बीच युद्ध था। श्री कृष्ण ने इसमें सत्य के पक्ष का साथ दिया। कृष्ण व अर्जुन के बीच दोस्ती से लगता है कि मित्रता एक ऐसा सम्बन्ध होता है कि जहां मित्र पर विपदा आने पर उसका मित्र उसकी पूरी सहायता करता है और उसका प्रयास होता कि मित्र पर आई मुसीबत शीघ्रतम दूर हो जाये। कृष्ण व सुदामा की मित्रता तो जन-जन में प्रसिद्ध है। दोनों एक साथ एक ही गुरू सन्दीपनी जी से गुरूकुल में पढ़ते थे। अध्ययन समाप्त होने के बाद दोनों अलग-2 हो गये। सुदामा पर आर्थिक कष्ट आ गये। उन्हें समान्य रूप से अपना जीवन व्यतीत करने में कठिनाईयां आईं। उस मुसीबत के समय में सहायता के लिए सुदामाजी को अपने मित्र कृष्ण की याद आई। वह उनके पास गये, दोनों परस्पर मिले और सुदामा जी की समस्या, चिन्ता व विपत्ति समाप्त हो गई। यह मित्रता का उदाहरण है। हम स्वयं भी जब अपने जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं जब-जब हमें किसी प्रकार की विपत्ति या कष्ट हुआ तो हमारी सहायता के लिए हमारे अनेक मित्र ही सामने आये और उनके सहयोग से हम अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल हुए। हम समाज में भी देखेते हैं कि सभी लोग अपने-अपने मित्र बना कर रखते हैं। उनसे मिलते जुलते रहते हैं। उनसे मिल कर प्रसन्न होते हैं। जब कभी उनका बाहर जाने व घूमने का कार्यक्रम होता है तो वह अपने प्रियजनों, जो मित्र की शर्तो कों कम या पूरा पूरा निबाहते हैं, उनके साथ जाते हैं। इसका कारण घर से दूर यात्रा में उनमें सुरक्षा का भाव रहता है।

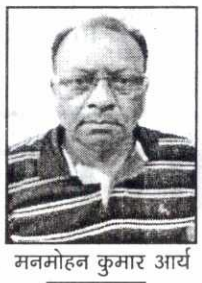

मनमोहन कुमार आर्य

हम यहां संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक वेद का उदाहरण लेते हैं। ऋग्वेद के एक मन्त्र में बताया गया है कि ईश्वर "शं नो मित्रः शं वरूणः शं नो भवत्वर्य्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरूरूक्रमः।।" हमारा ऐसा मित्र है जो सदैव हमारा कल्याण चाहता है व करता भी है। अब यह कैसे जाने कि ईश्वर का अस्तित्व है और वह हमारा मित्र है? उसका कुछ-कुछ स्वरूप भी हमें ज्ञात होना चाहिये। हम इस संसार को तथा अपने व दूसरों के शरीरों को देखते हैं। मनुष्य इन्हें बना नहीं सकते। अन्य कोई ऐसी सत्ता व शक्ति समस्त संसार में दिखाई नहीं देती जो इन्हें बना सके, परन्तु यह बने हुए हैं, हम नये-नये मानव व अन्य प्राणियों के शरीरों को बनते हुए देख रहे हैं जो निश्चित रूप से संसार में एक दिव्य, विशाल, सर्वज्ञ, चेतन, बलवान, अनादि व अनुत्पन्न, अमर व अनन्त सत्ता के होने का प्रमाण है। उसी सत्ता को ईश्वर कहते हैं। यह संसार अत्यन्त विशाल है जिसकी पूरी कल्पना भी मनुष्य नहीं कर पाता है। इससे वह दिव्य सत्ता सर्वव्यापक सिद्ध हो जाती है। और विचार करने पर वह सत्ता सत्य, चित्त अर्थात् ज्ञानवान और कर्मशील, आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता सिद्ध होती है। ऐसा उसका स्वरूप है। वह ईश्वरीय सत्ता हमारी मित्र कैसे है? इस प्रकार से कि उसने हम जीवों वा आत्माओं को सुख देने के लिए इस ब्रह्माण्ड व इसके समस्त पदार्थों, अन्न, दुग्धधारी पशु, फल के वृक्ष, जल, वायु, ओषधि आदि की रचना की है। यदि वह संसार या ब्रह्माण्ड की रचना न करता तो हम जीव लोगों का अस्तित्व होकर भी व्यर्थ का सिद्ध होता। हम मनुष्य या अन्य प्राणि योनियों में शरीर धारण नहीं कर सकते थे। उसने हमारे सबके लिए संसार को भी बनाया और हमें कर्म व भोग = सुख व दुःख के लिए शरीर प्रदान किये, इस कारण से वह हमारा मित्र सिद्ध होता है। यदि वह ऐसा न करता तो हम उसे मित्र न कहकर शत्रु कहते। अब तो वह निश्चित रूप से हमारा मित्र सिद्ध होता है और हम और सारा संसार उसका कृतज्ञ है। उसने कितनी सुन्दर व्यवस्था की है कि हमें माता, पिता, भाई, बहिन, सांसारिक मित्र, दादा, दादी, ताऊ, चाचा, तायी, चाची, बुआ, फूफा, मौसी, मौसा, मामी, मामा, सहयोगी आदि दिये हैं। इतना ही नहीं हमारे भोग के लिए पूर्व उल्लिखित संसार के अनेक पदार्थ बना कर दिये हैं। बहुत से पदार्थों का उपयोग तो हम विगत एक-दो शतकों से कर रहे हैं और बहुत से पदार्थ आज भी ऐसे हैं जिनका उपयोग हम इस लिए नहीं कर पा रहे हैं कि हमें उनके उपयोग का ज्ञान ही नहीं है। हमारे वैज्ञानिक अनुसंधान में संलग्न है और भविष्य में नये पदार्थ, उपकरण व उत्पाद हमारे सामने आयेगें।

वह हमारा मित्र कैसा है, उपर्युक्त मन्त्र में ही कहा गया है कि वह वरूण अर्थात् वरणीय, सर्वोत्कृष्ट, स्वीकारणीय व वरेश्वर है, अर्यमा अर्थात् पक्षपातरहित होकर न्याय का करने वाला है, इन्द्र अर्थात् परम ऐश्वर्यशाली है, बृहस्पति अर्थात् विद्या व वाणी का सर्वोत्तम महान स्वामी है जिसमें सुख की पराकाष्ठा है और जो धर्मात्मा मनुष्यों को अपना सुख व आनन्द प्रदान करता है, उसी परमात्मा से वेदवाणी व उस वेदवाणी के विकार से संसार में प्रचलित सभी वाणियां व भाषायें अस्तित्व में आईं हैं, वह विष्णु अर्थात् सर्वव्यापक है, सर्वत्र विद्यमान है तथा उरूक्रमः है अर्थात् अनन्त बलशाली व पराक्रमी है। जब हम उस ईश्वर के शरणागत हो कर उसको याद करते हैं व स्मरण करते हैं तो उसका ध्यान करने से वह हमें हमारी पात्रता के अनुरूप सुख, शक्ति, शान्ति व सामर्थ्य आदि देता है व हमारी इच्छाओं को पूरा करता है। इस प्रकार से ईश्वर संसार में मनुष्यों का सर्वोपरि मित्र है। वह अनादि काल से हमारा मित्र है और अनन्त काल अर्थात् हमेशा हमारा मित्र रहेगा क्योंकि वह अजन्मा व अमर है तथा हम भी अजन्में व अमर हैं। उसका व हमारा अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा। हम हमेशा-हमेशा साथ-साथ रहेगें। यह सत्य ज्ञान है। किसी को भी इसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। जो उपेक्षा करेगा वह अपनी बहुत बड़ी हानि करेगा जिसकी पूर्ति जन्म-जन्मान्तर में भी पूरी होगी या नहीं, कहा नहीं जा सकता।

यजुर्वेद 36/18 तो एक पूरा मन्त्र (दृते दृम् ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।) ही ऐसा है जिसका मुख्य विषय ही "मित्र कैसा हो" का वर्णन कर रहा है। इस मन्त्र में ईश्वर को अनन्त बल, महावीर, दुष्ट-स्वभाव-नाशक विदीर्ण-कर्म, परम ऐश्वर्यवत्, सर्वसुहृदीश्वर, सर्वान्तरर्यामिन्, परमात्मा बताया गया है और उससे प्रार्थना व विनय की गई है कि हे भगवन् मुझे स्थिर न रखकर गतिशील रखिये, क्रियाशील रखते हुए मुझे विद्या, सत्य, धर्म आदि शुभगुणों में सदैव स्वकृपासामर्थ्य ही से स्थित करो। मुझको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि तथा विद्या-विज्ञान आदि दान से अत्यन्त बढ़ाओं, मुझे सब प्राणी

शेष पृष्ठ 8 पर....

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

सज्जन पुरुष के लक्षण

गतांक से आगे....

कव्वे की कांव-कांव को सुन सब उसे पत्थर मारते हैं और कोयल अपनी मधुर वाणी से सबकी प्रिय बन जाती है। इसलिये **सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात् प्रिय सत्य** बोलें अप्रिय नहीं।

३. सुदीतिभिः—जो अपने गुणों से सर्वत्र प्रकाशित हो। गुणों की कीर्ति पुण्य गन्ध के समान दूर-दूर तक स्वयं ही फैल जाती है। शरीर नश्वर है परन्तु गुणों से व्यक्ति चिरकाल अमर बना रहता है। गुणों से ही व्यक्ति गौरव को प्राप्त होता है। महल के ऊपर बैठा कव्वा क्या ऊपर बैठने से गरुड़ बन जाता है। पञ्चतन्त्र में कहा है—

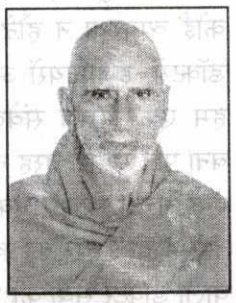

गुणिगणगणनारम्भे न पतति कठिनी ससंभ्रमा यस्य।
तेनाम्बायदि सुतिनी वदवन्ध्या कीदृशी भवति॥

गुणियों की गणना होते समय जिसकी ओर तर्जनी अंगुली अनायास ही न उठे, ऐसे पुत्र से यदि कोई माता अपने पुत्र को पुत्र वाली मानती है तो फिर बांझ किसका नाम है?

विभावसुम्—जिसका धन प्रकाशित अर्थात् नम्बर एक का है, नम्बर दो या काला धन नहीं है। जिसने पूरा कर नहीं दिया हो अथवा अवैध साधनों से धन को इकट्ठा कर उसे छिपा रखा हो उसे सज्जन पुरुष कदापि नहीं माना जा सकता। वह दस्यु या डाकू की श्रेणी में आता है। सज्जन और दुर्जन को लक्षणों से पहचाना जा सकता है—

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीत मेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

दुर्जन विद्या पढ़कर अभिमानी हो विवाद या कुतर्क करता है उसका धन उसे और गर्वोन्नत बना देता है। वह सीधे मुख किसी से बात ही नहीं करता। यदि दुर्जन शक्तिशाली है तो उसका बल दूसरों को पीड़ा देने में ही लगेगा।

इसके विपरीत सज्जन पुरुषों की विद्या ज्ञान के लिये, धन दान हेतु और शक्ति निर्बल जनों की रक्षा में लगती है। ऐसा व्यक्ति मरकर भी अमर हो जाता है।

(साभार-वेदस्वाध्याय) —आचार्य बलदेव

आवश्यकता

हरियाणा गोशाला संघ दयानन्दमठ रोहतक को आवश्यकता है एक कम्प्यूटर ऑपरेटर की, जो हिन्दी, अंग्रेजी भाषा में कम्प्यूटर की टाइपिंग तथा इण्टरनेट का कार्य कर सके। वेतन योग्यता अनुसार। आवेदक अपना आवेदन-पत्र शीघ्र भेजें। साक्षात्कार 20 अक्तूबर 2014 को प्रातः 11 बजे होगा। आवेदक को कोई मार्गव्यय नहीं दिया जाएगा।
सर्वमित्र आर्य, मंत्री, हरियाणा गोशाला संघ, दयानन्दमठ, रोहतक
मोबाइल नं० 9467240298, 8199938001

शोक-समाचार

आर्यसमाज सिसाना जिला सोनीपत के पूर्व प्रधान मा० रामसिंह आर्य का दिनांक 03-10-2014 को स्वर्गवास हो गया। वे आर्यसमाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर हार्दिक शोक-प्रकट करती है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति देवे तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। —**रामपाल आर्य,** सभामन्त्री

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	17 से 19 अक्तूबर 2014
2.	गुरुकुल लाढौत जिला रोहतक	19 अक्तूबर 2014
3.	आर्यसमाज अशोक विहार मालवीय नगर सोनीपत	19 अक्तूबर 2014
4.	आर्यसमाज लोहाणा जिला रेवाड़ी	25 से 26 अक्तूबर 2014
5.	आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी	8 से 9 नवम्बर 2014
6.	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	14 से 16 नवम्बर 2014
7.	आर्यसमाज बसई जिला गुड़गांव	14 से 16 नवम्बर 2014
8.	आर्यसमाज जीन्द शहर	21 से 23 नवम्बर 2014

—सभामन्त्री

वेद में प्रश्नोत्तर विद्या

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

यजुर्वेद के 23वें अध्याय में 45वें मन्त्र से लेकर 62वें मन्त्रों तक विद्वानों से जिज्ञासु बनकर कैसे प्रश्न करने चाहियें यह वर्णन किया है। पहला मंत्र प्रश्नों का है अगला मंत्र उत्तरों का है—

कः स्विदेकाकी चरति कऽउ स्विज्जायते पुनः।
किं स्विद् हिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत्॥ (यजु० 23/45)

अर्थ-हे विद्वान्! इस संसार में (कः स्वित्) कौन (एकाकी) अकेला (चरति) प्राप्त होता है एवं भ्रमण करता है? (क उ स्वित्) और कौन (पुनः) फिर (जायते) उत्पन्न होता है? (किं स्वित्) क्या (हिमस्य) शीत=ठण्ड की (भेषजम्) औषध है? (किमु) और कौन (महत्) महान् (आवपनम्) सर्वाधार है? यह बतलाइये।

भावार्थ-अकेला कौन भ्रमण करता है? शीत=ठण्ड का निवारक कौन है? बार-बार कौन उत्पन्न होता है? कौन महान् उत्पत्ति स्थान है? इन प्रश्नों के समाधान अगले मन्त्र में समझें। पूर्वोक्त प्रश्नों के उत्तर—

सूर्यऽएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्॥ (यजु० 23/46)

अर्थ-हे जिज्ञासु! (सूर्यः) सूर्यलोक (एकाकी) अकेला (चरति) भ्रमण करता है। (चन्द्रमाः) आह्लादकारी चन्द्र (पुनः) फिर (जायते) प्रकाशित होता है। (अग्निः) अग्नि (हिमस्य) शीत=ठण्ड का (भेषजम्) औषध है। (महत्) विस्तृत (आवपनम्) बीज बोने का क्षेत्र (भूमिः) पृथिवी है, ऐसा समझ।

भावार्थ-हे विद्वानो! सूर्य अपनी ही परिधि में भ्रमण करता है, किसी लोक के चारों ओर नहीं घूमता। चन्द्र आदि लोक उसी से प्रकाशित हैं। अग्नि ही शीत=ठण्ड का निवारक है। सब बीज बोने के लिए महान् क्षेत्र भूमि है, ऐसा तुम समझो।

मन्त्रों के प्रश्न और उत्तर—इस संसार में अकेला कौन भ्रमण करता है? तत्पश्चात् कौन उत्पन्न होता है? शीत का निवारक औषध क्या है? कौन सर्वाधार एवं महान् उत्पत्ति स्थान है? इन प्रश्नों का समाधान इस प्रकार किया गया है—

हे जिज्ञासु! सूर्य अपनी ही परिधि में अकेला ही भ्रमण करता है। वह किसी लोक के चारों ओर नहीं घूमता। तत्पश्चात् चन्द्रमा उत्पन्न होता है अर्थात् चन्द्र आदि लोक सूर्य से ही प्रकाशित होते हैं। अग्नि ही शीत का निवारक औषध है। सब बीज बोने के लिए महान् क्षेत्र भूमि ही है। विद्वानों से इस प्रकार प्रश्न करें—

किं स्वित्सूर्यसमं ज्योतिः किं स समुद्रसमं सरः।
किं स्वित्पृथिव्यै वर्षीयाः कस्य मात्रा न विद्यते॥ (यजु० 23/47)

अर्थ-हे विद्वान्! (किंस्वित्) कौन (सूर्यसमम्) सूर्य के तुल्य (ज्योतिः) प्रकाश स्वरूप है? (किम्) कौन (समुद्रसमम्) समुद्र के तुल्य (सरः) तालाब है? (किंस्वित्) कौन (पृथिव्यै) पृथिवी से (वर्षीयः) अधिक है? (कस्य) किसका (मात्रा) परिमाण (न) नहीं है? यह बताइये।

भावार्थ-सूर्य के समान तेजस्वी, समुद्र के समान तालाब और भूमि से अधिक कौन है? और किसका परिमाण नहीं है? इन प्रश्नों के उत्तर अगले मन्त्र में समझें। मन्त्रोक्त प्रश्नों के उत्तर—

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसम सरः।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते॥ (यजु० 23/48)

अर्थ-हे जिज्ञासु! तू (सूर्यसमम्) सूर्य के तुल्य (ज्योतिः) प्रकाशक (ब्रह्म) सबसे महान् अनन्त ब्रह्म, (समुद्रसमम्) समुद्र के तुल्य (सरः) तालाब (द्यौः) अन्तरिक्ष, (पृथिव्यै) पृथिवी से (वर्षीयान्) बड़ा (इन्द्रः) सूर्य, (गौः) वाणी की (तु) तो (मात्रा) परिमाण (न) नहीं (विद्यते) है, ऐसा जान।

भावार्थ-ब्रह्म के तुल्य अपने प्रकाश से प्रकाशमान ज्योति कोई नहीं है। सूर्य-प्रकाश से युक्त मेघ=बादल के तुल्य कोई जलाशय=तालाब नहीं है। सूर्य के तुल्य कोई लोकों का स्वामी नहीं है। वाणी के तुल्य व्यवहार-साधक कोई वस्तु नहीं है, ऐसा सब निश्चय करें।

विद्वानों से इस प्रकार प्रश्न करें—सूर्य के समान प्रकाश स्वरूप एवं तेजस्वी कौन है? समुद्र के समान तालाब कौन है? पृथिवी से बड़ा एवं अधिक कौन है? किसकी मात्रा अर्थात् परिमाण नहीं है? वेद में इन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं—

हे जिज्ञासु! अपने प्रकाश से प्रकाशमान, सबसे महान् अनन्त ब्रह्म के समान कोई ज्योति नहीं है? समुद्र अर्थात् सूर्य के प्रकाश से युक्त मेघ के समान कोई जलाशय=तालाब नहीं है। आकाश पृथिवी से बड़ा है और सूर्य सब लोकों का स्वामी है। वाणी की मात्रा=परिमाण नहीं है एवं वाणी के तुल्य व्यवहार-साधक कोई वस्तु नहीं है।

वेद के आदेशानुसार विद्वानों से सदा ज्ञानवर्द्धन करना चाहिये। इन मन्त्रों से यही शिक्षा प्राप्त होती है। यहाँ केवल चार ही प्रश्नोत्तर के मन्त्र प्रस्तुत किये हैं।

thearyasamaj.org

संस्कारविहीन शिक्षा—बढ़ते अपराध

❑ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

देश में निरन्तर बढ़ते अपराधों विशेषरूप से अपनी आधी आबादी पर हो रहे बलात्कार जैसे जघन्य अत्याचारों को देखते हुए इसके कारणों और दूरगामी समाधानों पर जब हम विचार करते हैं तो देश की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कमियाँ और दोष स्पष्ट दिखाई देती हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त देश के नीति-नियन्ताओं ने इस प्रचलित शिक्षा प्रणाली को चुन लिया। इस शिक्षा व्यवस्था को ब्रिटिश गुलामी के दिनों में लार्ड मैकाले द्वारा इस देश को सदा सर्वदा के लिए मानसिक रूप से गुलाम बनाए रखने के लिए लागू किया था। लार्ड मैकाले ने इस शिक्षा प्रणाली को ब्रिटिश साम्राज्य की नींवें मजबूत करने के उद्देश्य से इस सोच के साथ थोपा था कि हम इस देश की भावी पीढ़ी को उसकी संस्कृति की जड़ों से काट देंगे। परन्तु ना जाने क्यों किन कारणों से स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त देश के नीति नियन्ताओं ने गुलामी की मानसिकता की प्रतीक मैकाले की शिक्षा प्रणाली को अपनी भावी पीढ़ी के निर्माण के लिए अपना लिया गया जिसके दुष्परिणाम हम अपने समाज की वर्तमान अवस्था में भुगत रहे हैं। मैकाले की इस शिक्षा प्रणाली में तथाकथित विकास के नाम पर विनाश की धकेलती इस शिक्षा में संस्कारों, धर्म शिक्षा आदि का कोई स्थान नहीं था। मैकाले की यह शिक्षा प्रणाली केवल अंग्रेजों की सेवा करने के लिए क्लर्क और बाबू बनाने के लिए थी। मैकाले की इस शिक्षा प्रणाली में वर्तमान समय में भी हम अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर, मैनेजर आदि तो बना सकते हैं लेकिन चूंकि इसमें संस्कार देने की कोई व्यवस्था न होने के कारण इन डॉक्टरों, इंजीनियरों और मैनेजरों को हम एक अच्छा संवेदनशील मनुष्य बना पाने में पूरी तरह नाकाम हैं। यदि एक अच्छा डॉक्टर एक अच्छा इंसान नहीं है तो ईश्वर का रूप समझा जाने वाला डॉक्टर सेवा की भावना से किये जाने वाले कार्य को धन कमाने का व्यवसाय बना लेते हैं और शायद तभी किडनी चोरी, कन्या भ्रूणहत्या, माँ के गर्भ में लिंग परीक्षण, दवाइयों और जांच में कमीशन खोरी, जैसी घटनायें सामने आती हैं और पूरे चिकित्सक समाज को शर्मिन्दगी झेलनी पड़ती है। कमोबेश यही स्थिति इस शिक्षा प्रणाली से उत्पन्न प्रत्येक प्रकार के व्यवसायी की हो जाती है।

इसके समाधान पर चिंतन करते समय हम पाते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त उस समय तीन प्रकार की शिक्षा प्रणालियाँ हमारे देश में उपलब्ध थी। प्रथम प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था जिसमें शिक्षार्थी ब्रह्मचारी अपने माता-पिता का लाड़-दुलार छोड़कर आचार्य के गुरुकुल में रहकर शिक्षा ग्रहण करते हुए नया जन्म पाते थे। गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था में बिना किसी जाति, वर्ण या वर्गभेद के सभी ब्रह्मचारी एक साथ गुरुकुल में स्थापित आचार्य की व्यवस्था के अन्तर्गत रहते

शेष पृष्ठ 5 पर....

श्रद्धेय आचार्य राजवीर शास्त्री दिवंगत

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली के अध्यक्ष व मासिक 'दयानन्द सन्देश' के अवैतनिक एवं यशस्वी सम्पादक का देहान्त दिनांक 25 सितम्बर, 2014 ई० को हो गया। वे कुछ वर्षों से रोगग्रसित थे। उनके देहान्त का समाचार पाकर आर्यजगत् शोक में डूब गया।

वैदिक शास्त्रों के पौढ़ विद्वान् आचार्यवर राजवीर शास्त्री जी का जन्म सन् 1931 में फज़लगढ़ जिला गाजियाबाद में श्री शिवचरणदास जी के घर में हुआ था। गुरुकुल, झज्जर में आपने अध्ययन किया था तथा कुछ समय वहाँ अध्यापन कार्य भी किया। तत्पश्चात् मेरठ विश्वविद्यालय से एम.ए. (संस्कृत) व वाराणसी से प्राचीन व्याकरण की परीक्षा उत्तीर्ण करके आचार्य बने। लोकैषणा व वित्तैषणा से निवृत्त श्रद्धेय आचार्यवर कई वर्षों तक दिल्ली प्रशासन के अधीन संस्कृत का अध्यापन कार्य भी करते रहे। लाला दीपचन्द आर्य जी द्वारा स्थापित आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अध्यक्ष के रूप में सेवारत रहते हुए अनेक ग्रन्थों का लेखन, संशोधन अनुसन्धान व सम्पादन आदि सुकार्य कुशलता पूर्वक करते रहे जिनमें दयानन्द वैदिक कोष, यजुर्वेद देवतार्थ सूची, महर्षि दयानन्द वेदार्थ प्रकाश, दयानन्द-दिग्विजयार्क, ईश, केन, कठ उपनिषद् भाष्य, योगमीमांसा, विशुद्ध मनुस्मृति, संस्कारविधिः, उपदेश मञ्जरी, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, पातंजल योगदर्शन भाष्यम्, षट्दर्शन पदानुक्रमणिका आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई एवं परोपकारिणी सभा अजमेर तथा कुछ अन्य वैदिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित श्रद्धेय श्री पं० राजवीर शास्त्री जी '**सरिता**' द्वारा प्रकाशित वैदिक महापुरुषों व वैज्ञानिक सिद्धान्तों विषयक आलोचनात्मक लेखों के सप्रमाण व सटीक जो उत्तर दिया करते थे, वे बहुत पसन्द किये जाते थे। प्रामाणिक सृष्टि संवत् विषयक उनका विस्तृत लेख इतनी लोकप्रियता व मान्यता प्राप्त कर चुका है कि अब लगभग सभी वैदिक विद्वानों व पत्रिकाओं ने उसी सम्वत् को स्वीकार भी कर लिया है।

पूज्य आचार्य जी अत्यन्त विनम्र, सत्याग्रही, सत्यान्वेशी एवं वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ थे। उनको सश्रद्ध विदाई देते मन कह रहा है—

मौत उसकी जमाना करे जिसका अफसोस।
यूँ तो सभी जाते हैं बारी-बारी जाने के लिए॥

आज आचार्य जी सशरीर हमारे मध्य नहीं रहे परन्तु हम जानते हैं

यशः शरीरं न विनश्यति।

—इन्द्रजित्देव, चूना भट्ठियां, सिटी सेंटर के निकट, यमुनानगर मो० : 09466123677

प्यारे नेता नरेन्द्र मोदी! जागो वीर जवान

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

प्यारे नेता नरेन्द्र मोदी! जागो वीर जवान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची करदो शान, देश की लाज बचाओ॥

पाकिस्तान पड़ोसी दुश्मन, करता है नित मक्कारी।
ऊँच-नीच को नहीं जानता, उसकी अकल गई मारी।
बढ़ा रहा आतंकवाद को, भारत में शैतान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची करदो शान, देश की लाज बचाओ॥

गन्दे नेता पाकिस्तानी, हरदम झूठ बोलते हैं।
भले-बुरे को पुण्य-पाप को, पापी नहीं तोलते हैं।
रचते हैं षड्यन्त्र रात-दिन, झूठे बेईमान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची करदो शान, देश की लाज बचाओ॥

पाकिस्तान कुचाली जालिम, कभी बाज न आएगा।
सच मानो वह इस दुनिया से, जब तक न मिट जाएगा।
लात का यार बात ना माने, कहते हैं विद्वान्, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची करदो शान, देश की लाज बचाओ॥

उत्तर में है चीन हमारा, दुश्मन खतरनाक भारी।
तिब्बत जिस पापी ने लूटी, पूरा है अत्याचारी।
जिसकी करतूतों से परिचित, है अब सकल जहान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची करदो शान, देश की लाज बचाओ॥

सन् उन्नीस सौ बासठ में वह, भारत पर चढ़ आया था।
भारत की भोली जनता पर, जुल्म रात-दिन ढाया था।
भारत की धरती कब्जाई, हमें खूब है ज्ञान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची करदो शान, देश की लाज बचाओ॥

खुदगर्जों से कभी किसी की, हुई मित्रता सफल नहीं।
पढ़ो आप इतिहास पुराना, तुम्हें लगेगी बात सही।
विदुर, कृष्ण, चाणक्य जगत् में, देते थे व्याख्यान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची करदो शान, देश की लाज बचाओ॥

वल्लभ भाई पटेल बनो तुम, लालबहादुर बन जाओ।
गोली का उत्तर गोलों से, दो दुनिया में यश पाओ।
'**नन्दलाल निर्भय**' गाएगा, सारा जग यशगान, देश की लाज बचाओ।
वीर साहसी बनो राष्ट्र की, ऊँची करदो शान, देश की लाज बचाओ॥

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

thearyasamaj.org

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जन्मोत्सव सम्पन्न

सिद्धान्ती जी के पैतृक गांव बरहाणा (झज्जर) में दिनांक 3.10.2014 को उनका जन्म दिवस स्थानीय आर्यसमाज द्वारा धूमधाम से मनाया गया। उनकी पावन स्मृति में गांव में बनाये गये सिद्धान्ती स्मारक भवन परिसर में प्रात: 9 बजे से डॉ० राजपाल बरहाणा के निर्देशन में बृहद् यज्ञ का अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ जिसमें सभी उपस्थित स्त्री-पुरुषों व बालक-बालिकाओं ने मन्त्रोच्चारण पूर्वक आहुतियां अर्पित कीं तथा सिद्धान्ती जी के प्रति अपना श्रद्धा-भाव प्रकट किया। तत्पश्चात् क्रमश: श्री चांदराम थानेदार (सेवानिवृत्त), महाशय टेकराम आर्य, श्री राजपाल सिंह अहलावत प्रधान आर्यसमाज बरहाणा अभियन्ता (सेवानिवृत्त) एवं श्री श्रद्धानन्द आर्य ने सिद्धान्ती जी के व्यक्तित्व एवं सामाजिक, राजनैतिक व अध्यापन तथा लेखन-क्षेत्र में की गई सेवाओं का व्यापक परिचय दिया तथा उनके दिखाये मार्ग पर चलने व उनके गुणों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन कर रहे डॉ० राजपाल जी ने सिद्धान्ती जी की विद्वत्ता की प्रशंसा करते हुए उनकी पुस्तकीय रचनाओं का उल्लेख किया तथा विषम पारिवारिक परिस्थितियों का मुकाबला करते हुए सिद्धान्ती जी ने अपने जीवन में जो वैदुष्य प्राप्त किया उसे सभी के लिए प्रेरणास्पद बताया। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए उनके इस जन्म-गांव में बनाये गये श्री सिद्धान्ती आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय, श्री सिद्धान्ती यज्ञशाला, व्यायामशाला आदि सेवा प्रकल्पों के सुसंचालन में अपना सहयोग बनाये रखें और श्री सिद्धान्ती जी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को पवित्र बनाने का संकल्प लें यही उनके जन्मोत्सव मनाने का सच्चा लाभ होगा। उन्होंने उनके लघु भ्राता चौ० वेदमित्र व उनके सुपुत्रों के साढे नौ एकड़ भूमि-दान व समय-समय पर किये जाने वाले आर्थिक सहयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

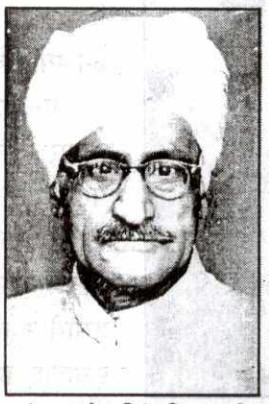

पं० जगदेव सिंह सिद्धान्ती

कार्यक्रम में उपस्थित सभी स्त्री-पुरुषों ने यथाशक्ति दान दिया तथा सिद्धान्ती जी के प्रति अपनी श्रद्धा-भावना व्यक्त की शान्तिपाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-मंत्री आर्यसमाज बरहाणा (झज्जर)

संस्कारविहीन शिक्षा-बढ़ते अपराध.... पृष्ठ 4 का शेष....

हुए जीवन की शिक्षा संस्कार प्राप्त करते थे। यह गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था पहली बार महाभारत काल में भंग हुई जब राजा धृतराष्ट्र ने पुत्रों के मोह में अंधे होकर गुरु द्रोण को राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत रहकर दुर्योधन आदि समस्त कौरवों को शिक्षा देने के लिए विवश कर दिया। तब शायद पहली बार दुर्योधन आदि को शिक्षा प्राप्त करते समय यह लगा कि हमारा आचार्य तो हमारे पिता की राज्य व्यवस्था के आधीन एक वित्तपोषित कर्मचारी है। अत एव उनके मन में कभी भी आचार्य के प्रति आदर का भाव नहीं रहा और उसी विद्यार्थी काल में आया जिद, उद्दण्डता और बड़ों के प्रति अनादर का भाव जो आगे चलकर महाभारत के युद्ध का कारण बना। उस समय इस गुरुकुलीय शिक्षा को स्वामी श्रद्धानन्द ने शिक्षा यज्ञ में अपना सर्वस्व आहूत करते हुए सफलता पूर्वक हरिद्वार, इन्द्रप्रस्थ, मटिण्डू आदि स्थानों पर गुरुकुल स्थापित किये और इतिहास साक्षी है कि इन गुरुकुलों ने शिक्षा संस्कार देकर स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले कितने क्रान्तिकारी तैयार किये। लेकिन इस गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को उस समय के नेताओं ने पुरानी धार्मिक कट्टरता वाली और प्रगति विरोधी मानकर खारिज कर दिया।

दूसरी शिक्षा प्रणाली जो शायद समय के अनुकूल थी। महात्मा हंसराज द्वारा नवीन और प्राचीन को जोड़कर बनाई गई एक अनूठे आन्दोलन के रूप में चलाई गई दयानन्द एंग्लों वैदिक शिक्षा व्यवस्था जिसे श्वेतवस्त्रधारी जीवन समर्पित करके चलाने वाले तपस्वी महात्मा हंसराज ने स्थापित किया जिसमें आधुनिकतम शिक्षा के साथ-साथ महर्षि देव दयानन्द द्वारा दिए गए सत्य वैदिक आर्य सिद्धान्तों से भी छात्रों का परिचय करवाया जाता था।

परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त शायद मानसिक गुलामी से पूरी तरह न मुक्त हो पाने के कारण उस समय के नेताओं ने गुलामी की प्रतीक मैकाले की शिक्षा व्यवस्था को अपना लिया। बच्चों के मन कोमल संवेदनशील कच्ची उर्वर मिट्टी की तरह होते हैं। उनमें जैसे बीज बो दिये जायें बड़े होकर वैसे ही बन जाते हैं। आज की शिक्षा व्यवस्था द्वारा हमने बच्चों को केवल पाश्चात्य भोगवाद की प्रेरणा दी और किसी भी प्रकार के कोई भी संस्कार नहीं दिए। आज वही पीढ़ी युवा अवस्था में संस्कार विहीन होकर अपराधों की तरफ विशेष रूप से भोगवाद में फँसकर नारी को भोग की वस्तु मानकर बलात्कार सरीखे अत्याचार कर रहे हैं तो हम बड़ी-बड़ी बहस करते हैं और कानून व्यवस्था के लिए एक-दूसरे पर दोषारोपण करते हुए राजनीति करते हैं। पर हमारा ध्यान इस बिमारी के मूल यानि दोषी शिक्षा व्यवस्था पर नहीं जाता बल्कि उसका तो हंम और अधिक व्यवसायीकरण करते जा रहे हैं। हम आज अपने बच्चों को बड़े-बड़े डोनेशन देकर उच्च शिक्षा इसलिए दिलवाते हैं कि वह बड़ा होकर किसी एम.एन.सी. में मोटा पैकेज लेगा। जब हम भी एक व्यापारी की तरह बच्चों की शिक्षा में व्यवसाय की तरह इनवेस्ट करते हैं और फिर रिटर्न की आशा करते हैं। हमने खुद भी कभी बच्चों की शिक्षा में संस्कार देने का प्रयास नहीं किया। लेकिन अब भी यदि हम जाग जायें और इन सभी बुराइयों की जड़ वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिवर्तित करते हुए यदि नैतिक एवं धर्म शिक्षा को भी शामिल कर ले तो निश्चित रूप से बच्चों को संस्कारवान बना पायेंगे और यही बच्चे कल के अच्छे आदर्श नागरिक बनकर राष्ट्र की मजबूत बुलन्द इमारत का आधार बनेंगे और जब हमारे नागरिक संस्कारवान और सम्भ्रान्त होंगे तो अपराध स्वत: कम हो जायेंगे और फिर किसी भी संस्कारवान् व्यक्ति से नारी पर अत्याचार स्वत: समाप्त हो जायेंगे। कहा भी जाता है कि यदि सावधानी बरती जाये और बीमारी पैदा होने वाले कारणों को समाप्त कर दिया जाये तो निश्चित रूप से वह बीमारी नहीं होगी।

-602 जी एच 53 सै०-20, पंचकूला
09467608686, 0172-4001895

तुम्हारी याद

इक याद तुम्हारी याद रहे, और दिल में किसी की याद न हो।
मेरे दिल की सुन्दर नगरी में, कोई तेरे बिना आबाद न हो।
यह तेरी निगाहें तेरे ही, दीदार की भगवन् प्यासी हो।
तेरे दीद बिना दिलवर प्यारे, कहीं जीवन यूं बरबाद न हो।
तेरी याद की मस्ती में खोकर, सुध भूल के तुझको पा जाऊँ।
तेरा नाम रहे हरदम लब पर, बस और कोई फरियाद न हो।
हर गीत तेरी भगती का, दीवाना बना दे दुनिया को।
न **'वीर'** रहे कोई दिल ऐसा, जिस दिल में तुम्हारी याद न हो।

प्रार्थना

सच्चा तू करतार है, सबका पालनहार है।
सबको तेरा आश्रय सुखों का भण्डार है॥
रवि शशि तारागण भूमि तेरी याद दिलाते हैं।
नदी सरोवर सागर सरिता सब तेरे गुण गाते हैं।
मयूर कोकिला पक्षी गाते सबका सिरजनहार है॥
वन-पर्वत और वृक्ष वाटिका तेरा पता बताते हैं।
बादल गर्जे विद्युत् चमके वर्षा ओले आते हैं।
जलचर थलचर नभचर कहते और कौन आधार है॥
ऋषि मुनि और यदि सती सब ओ३म् नाम को गाते हैं।
शुद्ध आत्मा होती उनकी तेरे दर्शन पाते हैं।
जीवन मुक्त सफल वे होते उनकी नौका पार है॥
सच्चित और आनन्द ब्रह्म को वेदों ने बतलाया है।
निराकार और निर्गुण व्यापक अनन्त तेरी माया है।
ऊपर नीचे आगे पीछे तू सृष्टि का सार है॥
दूर से दूर निकट तू सब के सूक्ष्म और महान है।
और याचना करूँ में किससे किसको मेरा ध्यान है।
अच्छा बुरा प्रभु मैं तेरा तू सबका दातार है॥

भेंटकर्त्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

thearyasamaj.org

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के एनएसएस स्वयंसेवकों ने चलाया स्वच्छता अभियान

प्रधानमंत्री स्वच्छता अभियान के तहत गुरुकुल के स्वयंसेवकों ने दिया सफाई का पैगाम

कुरुक्षेत्र 02 अक्तूबर 2014 गुरुकुल कुरुक्षेत्र की एनएसएस इकाई के स्वयंसेवकों ने बृहस्पतिवार को प्रधानमंत्री स्वच्छता अभियान के तहत गुरुकुल परिसर व गाँव मिर्जापुर की मुख्य सड़क की सफाई की। गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने स्वच्छता अभियान से पूर्व स्वयंसेवकों को सफाई का महत्त्व बताते हुए कहा कि स्वच्छता में ही ईश्वर का निवास है। इसलिए हमें स्वच्छता को सर्वोपरि मानते हुए न केवल अपने तन व मन की, बल्कि अपने समीप के क्षेत्र को भी स्वच्छ रखना चाहिए, ताकि हमारा स्वास्थ्य उत्तम रहे और हम बीमारियों के प्रकोप से बच सकें। उन्होंने कहा कि स्वच्छ वातावरण के लिए सफाई का होना अनिवार्य है। यदि वातावरण प्रदूषित होगा तो हमें कोई भी बीमारियों का शिकार होने से नहीं बचा पाएगा। इसलिए स्वच्छता हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। प्राचार्य ने स्वयंसेवकों के साथ स्वयं गुरुकुल परिसर की सफाई की तत्पश्चात् उन्होंने हरी झण्डी दिखाकर स्वयंसेवकों को सफाई अभियान के लिए रवाना किया।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य डॉ देवव्रत आचार्य एनएसएस इकाई के स्वयंसेवकों के साथ स्वच्छता अभियान का नेतृत्व करते हुए।

एन.एस.एस. अधिकारी सुनील कुमार ने स्वयंसेवकों को स्वच्छता का पैगाम देते हुए कहा कि प्रत्येक मानव को स्वच्छता को अपने जीवन का मूल उद्देश्य समझना चाहिए, तभी प्रकृति हमारी रक्षा कर पाने में सक्षम होगी। इसलिए हमें भूमि व वातावरण को स्वच्छ रखने का उत्तरदायित्व निभाना चाहिए। इससे न केवल हम स्वच्छ रहेंगे बल्कि बीमारियों पर भी अंकुश लगेगा। इस अवसर पर गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, उपप्राचार्य शमशेर सिंह सांगवान, प्रेस प्रवक्ता श्यामलाल शर्मा, तेजिन्द्र सिंह के अतिरिक्त अनेक गुरुकुल के आचार्यगण व छात्रवृन्द उपस्थित थे।

खण्ड स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं में गुरुकुल के खिलाड़ियों का अद्भुत प्रदर्शन

कुरुक्षेत्र 6 अक्तूबर, 2014 गुरुकुल कुरुक्षेत्र के खिलाडियों ने खण्ड स्तरीय विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए फुटबॉल अंडर 14, 17, 19 आयु वर्ग में अग्रसेन पब्लिक स्कूल कुरुक्षेत्र को हराकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। बॉस्केट बॉल प्रतियोगिता में अंडर 14, 17 और 19 आयु वर्ग में अग्रसेन पब्लिक स्कूल की ही टीम को हराकर प्रथम स्थान हासिल किया। खो-खो प्रतियोगिता में अंडर 17 आयु वर्ग में राजकीय माध्यमिक स्कूल किरमिच की टीम को तथा इसी प्रतियोगिता में अंडर 19 आयु वर्ग में गीता स्कूल कुरुक्षेत्र की टीम को हराकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। हैंडबॉल प्रतियोगिता में अंडर 17 आयु वर्ग में राजकीय स्कूल बाखली की टीम को हराकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। नेट बॉल में व योगा में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। ताइक्वांडो व एथलेटिक्स में अंडर 14, 17 व 19 आयु वर्ग में 10 तथा 18 खिलाड़ियों ने प्रथम व द्वितीय स्थान अर्जित किया।

गुरुकुल प्रबंध समिति के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी, प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य व उप-प्राचार्य शमशेर सिंह सांगवान ने विजेता खिलाड़ियों तथा उनके खेल प्रशिक्षक देवी दयाल को इस उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ दीं तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित किया।

भूल-सुधार

'**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक 7 अक्तूबर 2014 के अंक में पृष्ठसंख्या 5 पर गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) का **23वाँ वार्षिक महोत्सव** के विज्ञापन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान का नाम **श्री स्वामी आर्यवेश** छप गया है जो कि गलत है जिसका हमें खेद है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान **आचार्य बलदेव जी** हैं। —सम्पादक

।। ओ३म् ।।

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत (रोहतक) का

23वां वार्षिक महोत्सव

दिनांक 19 अक्तूबर 2014 रविवार तदनुसार कार्तिक कृष्णा एकादशी सम्वत् २०७१

सभी सज्जनों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि आपके अपने प्रिय गुरुकुल का **वार्षिक महोत्सव** दिनांक **19 अक्तूबर 2014 रविवार** को **पूज्य स्वामी आर्यवेश जी** की अध्यक्षता में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है। आप सभी इष्ट-मित्रों सहित अधिकाधिक संख्या में अपने प्रिय गुरुकुल में आमन्त्रित हैं।

कार्यक्रम

महायज्ञ तथा प्रसाद वितरण..... प्रात: 8 बजे से 10 बजे तक
भाषण, भजनोंपदेश तथा नाटक आदि..... प्रात: 10 बजे से 1 बजे तक
भोजन..... दोपहर 1 से 2 बजे तक

आमन्त्रित विद्वान

डॉ. धर्मपाल जी (रोहतक), **डॉ. श्याम देव,** प्राध्यापक, **श्री रामपाल आर्य** (मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा), **डॉ. जयवीर** (गुडगांवा), **श्री वेदप्रकाश आर्य** (मंत्री गुरुकुल सिंघपुरा), **श्री दयानन्द आर्य** (अधिवक्ता बालन्द), **श्री रामपाल शास्त्री** (मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली), **श्री सुशील आर्य** तथा **महेन्द्र सिंह आर्य** एवं **बहन दयावती आर्या** की भजन मण्डलियाँ। **ब्रह्मचारियों** द्वारा विशेष नाटक की प्रस्तुति 12:30 बजे।

महायज्ञ एवं यजमान

डॉ. सुरेन्द्र महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के ब्रह्मत्व में प्रात: महायज्ञ का आयोजन होगा। यज्ञ प्रेमी सज्जन श्रद्धानुसार घृत सामग्री का योगदान करके पुण्य के भागी बनें। यज्ञ के यजमान ठीक प्रात: 8:00 बजे महायज्ञ में सादी वेशभूषा में यज्ञशाला में पहुंचने की कृपा करें। क्योंकि उन्हें स्वयं आहुतियां देकर यज्ञ संपन्न करना है।

निवेदक

प्राचार्य :	कोषाध्यक्ष :	मन्त्री :	अध्यक्ष :	संरक्षक :
जगदीप जी	मा० रामप्रकाश आर्य	कपूर सिंह आर्य	आचार्य हरिदत्त	सेठ कृष्ण जी (हिमगिरि इण्डस्ट्रीज)

thearyasamaj.org

वैदिक प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

दिनांक 28.9.2014 प्रात:काल की शुभ वेला में गांव बलियाणा जिला रोहतक में श्री कुलदीप सिंह पुत्र स्वर्गीय श्री दयाराम के घर पर पुत्ररत्न प्राप्ति के नामकरण संस्कार के उपलक्ष्य में श्री ज्ञानसिंह दहिया के सौजन्य से किया गया। डॉ. जगदेवसिंह विद्यालंकार ने अपने ब्रह्मत्व में यज्ञ करते हुए नामकरण संस्कार किया तथा अपने उपदेश में सोलह संस्कारों का महत्त्व तथा नाम की सार्थकता का वर्णन करते हुए यज्ञ में उपस्थित सभी धर्मप्रेमी व प्रियजन, विशेषकर महिलाओं को सन्देश दिया कि सन्तान के निर्माण में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान सबसे पहले माता, फिर पिता तथा आचार्य का होता है जिसमें उन्होंने सीता माता तथा माता मदालसा का उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे उन्होंने अपने पुत्रों को इच्छानुसार निर्मित किया। बच्चे का नाम शौर्य रखते हुए नाम का अर्थ तथा उसकी के अनुसार बच्चे का निर्माण करने की प्रेरणा दी।

बहन दया आर्या, सुशील कुमार तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक सत्यपाल मधुर ने अपने भजनों के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों, पाखण्ड के बारे में सावधान करते हुए आर्यसमाज के उद्देश्य तथा नियमों पर चलते हुए स्वामी दयानन्द के अनुयायी बनने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में गांव के प्रियजनों तथा विशेषकर महिलाओं ने बड़ी रुचि से भाग लेते हुए दो गीत स्वामी दयानन्द के बारे में गाये।

आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक के पदाधिकारी व सदस्यों ने अपना योगदान दिया जिसमें रणवीर सिंह मान, सुभाष सांगवान, राजेश, अनूप श्योराण, ज्ञानसिंह दहिया, स्नेहलता, जगबीर मलिक आदि ने भाग लिया।

शान्तिपाठ के बाद शुद्ध देशी घी का प्रसाद सभी आगन्तुकों को खिलाकर विदा किया। गांव के वृद्धजन इस कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए तथा अमर शहीद उदयवीर की माता ने अपना आशीर्वाद देकर उपकारित किया।

—सुखवीर सिंह दहिया,
तिलक नगर, रोहतक

घर-घर बृहद् यज्ञ व उपदेश सम्पन्न

हरयाणा की संस्कृति वैदिक संस्कृति है। यहाँ पर यज्ञों का महत्त्व अत्यधिक रहा है वह भी शुद्ध। ऋषि दयानन्द जी ने भी यहाँ आकर देखा तो कहा यहाँ आर्य विचार हैं। इसलिए ऋषि दयानन्द ने कहा यहाँ पोप का पाखण्ड नहीं चल सकता। आज भी यहाँ घर-घर यज्ञ का प्रचलन है। सितम्बर के अन्तिम सप्ताह श्री रामकुमार आर्य, श्री संदीप मास्टर, श्री चन्दसिंह, श्री नरदेव जी के घर पर आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुए। इसी प्रकार रोहतक सैक्टर-4 में 28-29 सितम्बर तक बृहद् यज्ञ व उपदेश हुआ। आचार्य जी के सान्निध्य में इस यज्ञ में अनेक यजमान सम्मिलित हुए।

आचार्य जी ने परमात्मा तथा प्रकृति के स्वरूप पर प्रकाश डाला। यह संसार परमात्मा की उत्कृष्ट रचना है। इसमें कहीं भी कमी देखने को नहीं मिल सकती। परमात्मा ने उत्कृष्ट कर्मों के आधार पर श्रेष्ठ मानव शरीर तथा निकृष्ट कर्म से अन्य जीवों के शरीर दिये। परमात्मा ने मन, बुद्धि आदि प्रदान की। उसी परमात्मा की उपासना करनी चाहिए। कार्यक्रम का आयोजन रवीन्द्र मलिक ने किया।

आवश्यक निवेदन

प्रिय पाठकवृन्द,

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक आपका अपना, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का मुख-पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बने। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुँचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़ें और इसे पसन्द करें। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए **'आर्य प्रतिनिधि'** साप्ताहिक की ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे-सम्बन्धियों को इसके ग्राहक बनायें। साथ ही अपना पत्रिका का वार्षिक शुल्क 150/- रु० भी प्रेषित करें।

विशेष—बार-बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बने। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार सम्पादक-**'आर्य प्रतिनिधि'** साप्ताहिक दयानन्दमठ रोहतक के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

—मा० रामपाल आर्य, सभामंत्री

जिला वेदप्रचार मण्डल सोनीपत का निर्वाचन

वेदप्रचार मण्डल जिला सोनीपत के पुनर्गठन हेतु 14.9.2014 को एक आवश्यक बैठक आर्यसमाज गुढ़ा रोड गोहाना में बुलाई गई थी जिसकी अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी मन्त्री मा० रामपाल जी आर्य ने की। अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों की मौजूदगी में वेदप्रचार मण्डल जिला सोनीपत के पुनर्गठन में श्री रमेश आर्य को दोबारा 3 वर्ष के लिए सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया और उनको अपनी कार्यकारिणी बनाने का पूरा अधिकार दिया गया।

दिनांक 28.9.2014 को जिला अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल सोनीपत ने आर्यसमाज मालवीय नगर अशोक विहार सोनीपत में अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की जो इस प्रकार है—

1. संरक्षक-आचार्य संदीप जी, 2. अध्यक्ष-श्री रमेश आर्य (आर्यसमाज बड़वासनी), 3. कार्यकारीध्यक्ष-मा० ओमप्रकाश आर्य (माहरा), 4. वरिष्ठ उपप्रधान-मुकेश रावत (मॉडल टाउन, सोनीपत), 5. उपप्रधान-डॉ. अमरसिंह तोमर (आर्यसमाज मालवीय नगर), 6. मंत्री-श्री देवेन्द्र आर्य (आर्यसमाज तिड़ाड़ चोरा), 7. उपमंत्री-श्री दयानन्द आर्य (आर्यसमाज ठरू), 8. कोषाध्यक्ष-श्री वीरसैन आर्य (शान्तिनगर सोनीपत), 9. लेखानिरीक्षक-सुभाष चांदना (आर्यसमाज बड़ा बाजार), 10. मीडिया प्रभारी-श्री जगदीश चहल (आर्यसमाज अशोक विहार, सोनीपत), 11. प्रचारमन्त्री-संजीत शास्त्री (आर्यसमाज बड़वासनी), संगठनमन्त्री-श्री प्रेमसिंह दहिया (आर्यसमाज भठगांव),

अन्तरंग सदस्य

1. श्री करतार सिंह आर्य (आर्यसमाज आर्यसमाज गुढा रोड गोहाना), 2. श्री छत्तर सिंह आर्य (आर्यसमाज जाहरी), 3. श्री भारत भूषण बतरा (आर्यसमाज गन्नौर), 4. श्री वेदप्रकाश आर्य (आर्यसमाज रोहणा), 5. डॉ. रोशन लाल आर्य (आर्यसमाज मलहाणा), 6. श्री धर्मवीर शास्त्री (आर्यसमाज फरमाणा), 7. श्री नरेन्द्र आर्य (आर्यसमाज बड़ा बाजार), 8. श्री सुदर्शन आर्य (आर्यसमाज बड़ा बाजार), 9. डॉ. नारायण सिंह (आर्यसमाज मालवीय नगर), 10. श्री धर्मपाल आर्य (आर्यसमाज सलारपुर माजरा), 11. श्री प्रीतम हसीजा (आर्यसमाज सैक्टर-15, सोनीपत), 12. अर्जुन देव (आर्यसमाज मॉडल टाउन), 13. श्री ईश्वर दयाल (आर्यसमाज सैक्टर-14, सोनीपत), 14. श्री अशोक गोयल (आर्यसमाज काठमण्डी, सोनीपत), 15. श्री सुधांशु (डी.ए.वी. सैक्टर-15, सोनीपत)।

विशेष आमन्त्रित सदस्य

1. श्री रणधीरसिंह ढुल (आर्यसमाज सैक्टर-14), 2. श्री मनोहरलाल चावला, 3. श्री विवेक मित्तल, 4. श्रीमती माता राज गुलाटी जी।

वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष ने सभी सदस्यों से निवेदन किया कि आने वाला समय आर्यसमाज के लिए एक नई दिशा है। सब मिलकर आर्यसमाज को गति दें ताकि समाज में फैली अनेक कुरीतियों को दूर किया जा सके। सभी पदाधिकारियों व अन्तरंग सदस्यों से अपील की कि 1 दिसम्बर से 25 दिसम्बर तक वेदों की ओर लौटो अभियान के तहत सोनीपत जिला के गांव-गांव में निकलने वाली वेदप्रचार यात्रा में सहयोग करेंगे।

—जगदीश चहल, मीडिया प्रभारी

यदि ईश्वर वेदज्ञान न देता तो.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

सुनकर या पढ़कर वह अपने जीवन को, शुभ कार्यों को करते हुए उत्तरोत्तर उन्नत व समृद्धिशाली बना सके, साथ ही अष्टांग योग द्वारा यम-नियमों को जीवन में धारण करते हुए आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान को करते हुए समाधि का आनन्द ले सकें और मृत्यु के बाद मोक्ष को, परम आनन्द को, ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए प्राप्त कर सकें जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। इसके बाद मनुष्य की कोई इच्छा बाकी नहीं रह जाती है यानी यह मनुष्य की अन्तिम इच्छा है। यदि ईश्वर प्रारम्भ में ही मनुष्यों को वेदज्ञान नहीं देता तो मनुष्य भी अन्य पशु-पक्षियों की भांति असभ्य रूप से रहता हुआ पशुवत् ही अपना जीवन व्यतीत करता। इसलिए सभी मनुष्यों को अभीष्ट है कि वह वैदिक धर्म को अपनाकर अपने व अन्यों के जीवन को उन्नत व सफल बनावे।

संपर्क-गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स,
180 महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला)
कोलकाता-7 फोन 033-22183825

thearyasamaj.org

जम्मू-कश्मीर की विनाशकारी आपदा में राहत कार्यों में लगे वीर सैनिकों को कोटि-कोटि नमन

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

2 सितम्बर का दिन जम्मू-कश्मीर राज्य पर कहर की तरह टूटा। भारी मुसलाधार वर्षा के कारण जेहलम नदी का पानी प्रलयंकारी बाढ़ का भयंकर रूप धारण करके कश्मीर घाटी में प्रवेश कर गया। चारों ओर हाहाकार एवं चीत्कार के अतिरिक्त कुछ नहीं था। श्रीनगर, पूंछ, राजौरी, नौशहर एवं ऊधमपुर, अनन्तनाग, बारामूला आदि छोटे-बड़े नगरों में भीषण बाढ़ के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। रावी नदी तथा अन्य नालों के कारण अनेक छोटे-बड़े गांव जलमग्न हो गए। सैकड़ों एकड़ भूमि की फसलें नष्ट हो गईं। भयंकर बाढ़ के कारण हजारों की संख्या में कच्चे तथा पक्के मकान पानी में बह गए। जम्मू से 48 किलो मीटर दूर अखनूर में बाढ़ और भू-स्खलन से काफी नुकसान हुआ। अनेक ट्रक, कार, मोटर आदि वाहन जमीन में ही धंस गए। जम्मू में तवी नदी किनारे अवैध निर्माणों को सबसे अधिक नुकसान हुआ। अनुमान के अनुसार 3000 गांव कश्मीर घाटी में आई बाढ़ के शिकार हुए हैं। आज से 60 वर्ष पहले भी इसी प्रकार जम्मू-कश्मीर में प्राकृतिक आपदा आई थी।

11 सितम्बर को देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर का हवाई सर्वेक्षण किया। उन्होंने अपनी आंखों से तबाही का ऐसा खौफनाक आलम देखा। उन्होंने भारतीयों से अपील की कि वे जम्मू-कश्मीर में बाढ़ प्रभावित लोगों के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में खुले दिल से दान करें। उन्होंने इस आपदा को राष्ट्रीय आपदा घोषित किया। उन्होंने प्रधानमंत्री कोष से 11 हजार करोड़ रुपये देने की घोषणा की।

हमारी सेना के जवानों ने अब तक 2 लाख 64 हजार लोगों को बाढ़ से निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा दिया है। लेकिन अभी भी 5 लाख लोग बाढ़ में फँसे हैं। इन्हें भोजन, पानी, दवाइयां आदि देने का काम युद्ध स्तर पर किया जा रहा है। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा है कि सेना के जवानों ने अपनी जान पर खेलते हुए कश्मीर के लोगों को बचाया है। सत्य यही है कि सेना के शौर्य, वीरता एवं साहस के कारण ही इस प्राकृतिक आपदा का मुकाबला किया जा सका है। दूसरा बड़ा कार्य किया है, गुरुद्वारों और मस्जिदों ने, जहाँ हजारों लोगों ने रहकर संकट के दिन बिताए हैं। अब वे धीरे-धीरे अपने गांवों को लौट रहे हैं।

अब जबकि बाढ़ का पानी कम होना शुरू हुआ है, घाटी और जम्मू में जनजीवन सामान्य होने लगा है। ऐसे समय में उन लाखों लोगों को पुनः बसाने का है जिनके घर तबाह हो चुके हैं। इसलिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की गई अपील पर प्रत्येक भारतीय को राहत कोष में कुछ राशि अवश्य डालनी चाहिए। अनेक संस्थाओं ने इस दिशा में कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

पुनः सेना के जवानों को कोटि-कोटि नमन। वतन पर मिटने वाले इन जवानों को नमन।

यज्ञप्रेमी माँ नहीं रही

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्रीमती हर्ष मुंजाल जी का निधन दिनांक 03.09.2014 को नई दिल्ली में हो गया। आप पिछले कुछ वर्षों से रुग्ण अवस्था में थीं लेकिन परमपिता परमात्मा की आज्ञानुसार आपने इस देह को त्यागा।

आप श्री योगेश मुंजाल, ट्रस्टी श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं ला. दीवानचन्द ट्रस्ट के अतिरिक्त अन्य कई शिक्षण संस्थाओं एवं सामाजिक संस्थाओं के अधिकारी तथा सुप्रसिद्ध हीरो परिवार के प्रमुख प्रमुख सदस्य की धर्मपत्नी एवं महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जो कि विश्व की आर्यसमाजों में चर्चित नाम है, की पुत्रवधू थीं।

आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं और सारे दायित्वों से निवृत्त हो चुकी थी। यज्ञ से आपका विशेष लगाव था। आज के भौतिक वातावरण में महिलायें जहां किट्टी आदि परम्पराओं में संलग्न हैं, वहाँ श्रीमती हर्ष मुंजाल जी ने महिलाओं का एक छोटा-सा संगठन बनाया जिसकी 60 महिला सदस्यायें हैं। इस संगठन की एक महिला के यहां प्रतिमास क्रमानुसार यज्ञ करवाया जाता है और श्रीमती हर्ष मुंजाल स्वयं यज्ञ करवाती थी। निःसन्देह यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उन्होंने अपने पुत्र-पुत्रियों को भी इस प्रकार के संस्कार दिये और वे भी यज्ञ से जुड़े हुए हैं। मुंजाल परिवार के प्रत्येक सदस्य के घर पर यज्ञशाला है और वहां प्रतिदिन यज्ञ होता है।

दिनांक 06.09.2014 को हुई प्रार्थना सभा में डॉ. महेश विद्यालंकार एवं आचार्य अखिलेश्वर जी के प्रेरक प्रवचन हुए। उपस्थित जनसमूह में आर्यजगत् के संन्यासीवृन्द एवं प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। साथ ही उद्योग जगत् से भी भारी संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित थे।

ऐसी दिवंगत यज्ञप्रेमी माँ के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो और उनके शोकाकुल परिवार को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिले।

—अजय सहगल, संपादक (टंकारा समाचार)

हम सब प्राणी एक-दूसरे को मित्र.... पृष्ठ 2 का शेष....

मित्र की दृष्टि से देखें, सब मेरे मित्र हो जायें, कोई मुझसे किंचिनमात्र भी वैर-दृष्टि न करें। मैं निर्वैर होके सब प्राणी और अप्राणी चराचर जगत् को मित्र की दृष्टि से स्वात्म (अपनी आत्मा के समान), स्वप्राणवत् प्रिय जानू अर्थात् पक्षपात छोड़के सब जीव व देहधारीमात्र अत्यन्त प्रेम से परस्पर वर्तमान करें। अन्याय से युक्त होके किसी पर कभी हम लोग न वर्तें। वस्तुतः मनुष्य का कर्तव्य ही उसका धर्म कहलाता है। किसी विद्वान या महापुरूष द्वारा प्रवर्तित विचारधारा मत या मजहब हो सकती है, धर्म कदापि नहीं। धर्म का संस्थापक तो ईश्वर ही होता है जो कि सब मनुष्यों व प्राणियों का सदा-सर्वदा मित्र है और रहेगा और वही वेद के रूप में सृष्टि के आरम्भ में धर्म का उपदेश करता है। बाद में महापुरूषों द्वारा जो मत स्थापित होते हैं वह मजहब, सम्प्रदाय या मत होते हैं, उन्हें धर्म होना स्वीकार नहीं किया जा सकता। वेदों में ईश्वर ने उपदेश दिया है कि वह सभी प्राणियों का मित्र है और उसका अनुकरण कर सब प्राणियों एक दूसरे का मित्र बनना चाहिये। आज स्थिति इसके विपरीत है। इसमें सुधार की आवश्यकता है। इस संसार में पूर्ण सुख तभी होगा जब संसार के लोग एक दूसरे के सब तरह से मित्र बन जायेगें। इस मित्रता व दोस्ती के भाव जो कि परमधर्म है, का सब मनुष्यों के लिए परमात्मा ने उपदेश किया है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में ईश्वर को "इन्द्रस्य युज्यः सखा" कहकर उसे मनुष्य आदि प्राणियों का सच्चा व योग्य मित्र कहा गया है। ईश्वर से बढ़कर मनुष्य व अन्य प्राणियों का कोई मित्र नहीं है। मित्रता व दोस्ती से दोनों को लाभ होता है व शत्रुता से दोनों को हानि होती है। अतः हमें सबसे मित्रता करनी चाहिये और शत्रुओं को भी यदि मित्र बनाया जा सकता हो तो बनाना चाहिये। इतिहास में राम व सुग्रीव, कृष्ण-सुदामा तथा राम-विभीषण की मित्रता के उदाहरण से स्पष्ट है कि दो व्यक्तियों की मित्रता से दोनों को लाभ होता है। वहीं राम व रावण तथा दुर्योधन व पाण्डवों की शत्रुता से यह परिणाम निकलता है जो असत्य पर होता है, उसका विनाश हो जाता और सत्य विजयी होता है। मित्रता सत्य व्यवहार का प्रतीक है और शत्रुता असत्य व्यवहार का। सभी मनुष्यों को प्रतिदिन आत्म चिन्तन करना चाहिये और अपने हृदय से असत्य व शत्रुता के भावों को निकाल कर उनके स्थान पर सत्य व मित्रता के भावों को स्थान देना चाहिये।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।